ई–पत्रिका

खण्ड 2 अंक 4 जनवरी–मार्च, 2026

विश्वविद्यालय में अल्टरनेरिया और मार्सोनिना पत्ता धब्बा रोग पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

माननीय राजस्व, बागवानी एवं जनजातीय विकास मंत्री श्री जगत सिंह नेगी जी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय में सेब में अल्टरनेरिया और मार्सोनिना पत्ता धब्बा रोग के कारण उपचारात्मक रणनीतियों पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस अवसर पर माननीय बागवानी मंत्री ने कहा कि रोग नियंत्रण एवं उपचार के लिए वैज्ञानिकों द्वारा दिए गए परामर्श एवं बागवानों के सुझावों को अपनाया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल, बागवानी विभाग के निदेशक विनय सिंह सहित बागवानी विभाग के अधिकारी, प्रगतिशील किसान और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने इन रोगों के प्रबंधन के लिए रणनीतियों पर चर्चा की। इस अवसर पर क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, मशोबरा की कीट वैज्ञानिक डॉ. संगीता शर्मा ने सेब में माईट के प्रकार, बढ़ोतरी के कारण, निवारण और प्रबंधन विषय पर पूर्ण जानकारी प्रदान की। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. शालिनी वर्मा, डॉ. नीलम कुमारी, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, रोहडू की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. ऊषा शर्मा, बी.टी.एम. कटराईं, कुल्लू की नीजू राणा ने सारगर्भित जानकारी प्रदान की। प्रदेश के विभिन्न भागों से आए प्रगतिशील बागवानों ने विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यशाला में वैज्ञानिकों एवं बागवानों ने स्पष्ट किया कि स्वस्थ मृदा ही स्वस्थ पौधा प्रदान कर सकती है और इन्हीं के माध्यम से बेहतर फसल प्राप्त की जा सकती है।

विस्तार शिक्षा निदेशालय
डॉ. यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी–सोलन, हिमाचल प्रदेश

बगबानी सम्बन्धित जनवरी से मार्च माह की कार्यसारणी

सभी शीतोष्ण फलों में काट–छांट व सिधाई के कार्य के लिए यह उचित समय है। पौधों का सुसुप्तावस्था में जाने के बाद काट–छाँट व सिधाई का कार्य आरम्भ करें। काट–छाँट के बड़े घावों पर चौबाटिया पेस्ट का लेप लगाएँ तथा काट–छाँट के बाद बोर्डो मिश्रण या कॉपर फफूँदनाशक दवाई का छिड़काव करें। बागीचे से काट–छाँट की गई शाखाऐं इकट्ठी करें तथा झाड़ियां आदि को निकाल कर बागीचों को साफ रखें। फल पौधों की नर्सरी उत्पादन के लिए सेब, आड़ू, चूली, कैंथ, किवी, अखरोट व पीकान के बीजों को स्ट्रैटीफिकेशन के लिए डालें। सभी शीतोष्ण फलदार पौधों में गली–सड़ी गोबर की खाद व उर्वरक का उपयोग पौधों की आयु अनुसार करें।

सदाबहार फलों में किन्नू , संतरा, माल्टा, चकोतरा आदि फलों का तुड़ान करें तथा नर्सरी पौधों को पाले से बचाने के लिए घास, पत्तों आदि की छान बनाकर ढक लें। पाला पड़ने की सम्भावना में सिंचाई करें। सूखा पड़ने की अवस्था में भी सिंचाई करना जरूरी है तथा रोग व कीटग्रस्त शाखाओं को काट–छाँट कर के निकाल दें। पौधों के तौलियों में नमी को संरक्षित करने के लिए घास की मोटी तह के रूप में मल्च बिछाएं।

शीतोष्ण फल पौधों को लगाने का आजकल उपयुक्त समय है। लम्बे सूखे की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए वर्षा होने के पश्चात् ही पौधारोपण का कार्य करें। यह फल पौधे मार्च के महीने तक रोपित किये जा सकते हैं लेकिन जनवरी के महीने में इन फल पौधों का रोपण उपयुक्त रहेगा। टेढ़े–मेढ़े पहाड़ी और अधिक ढलान वाले क्षेत्रों में साधारणतया फल पौधों को कन्टूर विधि द्वारा लगायें। जिन बागवानों के पास छोटे–छोटे खेत बने हों या बनाये जा सकें, इन खेतों के मध्य में उचित दूरी पर फल पौधों को लगाएं। खेतों की ढलान अन्दर की ओर रखें जिससे वर्षा के पानी का सही उपयोग हो सके और भूमि कटाव भी कम हो। सघन बागवानी के लिए फल पौधे वहीं लगायें जहां भूमि अधिक उपजाऊ, समतल तथा अधिक उत्पादन क्षमता वाली हो, सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो और तेज हवा भी न चलती हो। पौधों को एक दूसरे से अनुमोदित दूरी पर लगाना जरूरी है। यह दूरी फल की किस्म, मूलवृंत की किस्म, मिट्टी, जलवायु तथा काट–छांट की विधियों पर निर्भर करेगा। स्वनिष्फलता वाली किस्मों के साथ 25 से 33 प्रतिशत परागण किस्मों को अवश्य लगाएं।

फल पौधों को लगाते समय जड़ों को उनकी सही दिशा में फैला देना चाहिए। पौधों को पौधशाला की भांति ही स्वाभाविक गहराई तक दबा कर रोपित करें। मौसम की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए फल पौधों को लगाने के पश्चात् इनकी सिंचाई अवश्य करें और इसमें मल्च का उपयोग करें,

जिससे कि नमी को ज्यादा समय तक संजोकर रखा जा सके। कॉलर रॉट बीमारी से बचाव के लिए पौधे में कलम के जोड़ को भूमि के धरातल से लगभग 20–25 सैं.मी. ऊँचा रखें। इसी प्रकार नाशीकीटों जैसे सैंजोस्केल तथा वूली एफिड से बचाव के लिए पौधों को तेल (हॉर्टीकल्चर मिनरल ऑयल) के घोल या कीटनाशी घोल में डुबोएं या इनका छिड़काव करें।

गुठलीदार फलों, अखरोट, पीकाननट, किवी, नाशपाती, जापानीफल (परसीमन) तथा सेब

में कलम करने का कार्य पूरा कर लें तथा गुठलीदार पौधों, सेब, चैरी व नाशपाती में टॉप वर्किंग का कार्य भी समाप्त कर लें। अंकुरित बीजों की नर्सरी में बुआई कर लें। शुष्क शीतोष्ण क्षेत्रों में बर्फ पिघलते ही पौधरोपण का कार्य तथा इन क्षेत्रों में काट–छांट का कार्य भी समाप्त कर लें।

सब्जी की फसलों की कार्य रूपरेखा

जनवरी में प्याज की तैयार पनीरी को 15×10 सैं.मी. की दूरी पर खेतों में लगायें। बीज वाली फूलगोभी में नत्रजन उर्वरक की तीसरी मात्रा डालें और बोरिक एसिड 0.1 प्रतिशत (100 ग्राम/100 लीटर पानी) का छिड़काव करें। तना सड़न रोग की रोकथाम के लिए मैन्कोजेब (250 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) का छिड़काव करें। फरवरी में टमाटर, शिमलामिर्च, कड़वी मिर्च की पनीरी को मिट्टी को उपचारित करके डालें। मटर में नत्रजन खाद की दूसरी मात्रा डालें (2.2 कि.ग्रा. यूरिया/बीघा)। चूर्ण फफूँदी रोग की रोकथाम के लिए कैराथेन (50 मि. ली./100 लीटर पानी) या सल्फेक्स (200 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) के

बीज वाली फूलगोभी

घोल का छिड़काव करें। प्याज में नत्रजन उर्वरक की दूसरी मात्रा डालें (5.5 कि.ग्रा. यूरिया/बीघा)। मार्च में टमाटर, शिमला मिर्च और कड़वी मिर्च की तैयार पनीरी की खेतों में रोपाई करें। टमाटर की अनियमित ऊँचाई वाली किस्मों की 90×30 सैं.मी. तथा नियमित ऊँचाई वाली किस्मों की 60×45 सैं. मी. की दूरी पर रोपाई करें। फ्रांसबीन की बौनी किस्मों की 45×15 सैं.मी. की दूरी पर बुआई करें। मटर की बौनी किस्में अरकल या वी एल–7 की बीजाई करें। ऊँचे क्षेत्र में बर्फ पिघलने पर मटर की खड़ी फसल मे नत्रजन खाद की दूसरी मात्रा डालें (2.2 कि.ग्रा. यूरिया/बीघा)। फूलगोभी, बन्दगोभी, गांठगोभी, सरसों, टमाटर, शिमला मिर्च की पनीरी तैयार करें। मूली, शलगम और गाजर की 30×10 सैं.मी. की दूरी पर बीजाई करें। पालक (30×7.5 सैं.मी.) तथा मेथी (15×7.5 सैं.मी.) की बीजाई करें। अरकल मटर की बीजाई करें।

फूलों में होने वाले कार्य

जनवरी

- कारनेशन का मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में प्रवर्धन व पौधरोपण।
- गुलदाऊदी में हैडिंग बैक करने के बाद गुड़ाई, खाद व पानी देना।
- गुलाब का प्रवर्धन।
- लिलियम के कन्दों की बुआई।

फरवरी

- कारनेशन का मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में प्रवर्धन व पौधरोपण।
- गैंदे का प्रवर्धन।
- जरबेरा का हरितगृहों में पौधरोपण।
- ग्लेडियोलस के घनकन्दों की बुआई– मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में।
- गर्मियों वाले मौसमी फूलों की पौध तैयार करना।
- गुलाब का प्रवर्धन।

मार्च

- कारनेशन का प्रवर्धन व पौधरोपण–ऊँचे व मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में।
- गुलदाऊदी व गैंदे का प्रवर्धन।

- ग्लेडियोलस के कन्दों की बुआई–मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में।
- लिलियम, डैफोडिल और ट्यूलिप के फूलों का तुड़ान।
- गर्मियों वाले मौसमी फूलों की पौध तैयार करना तथा पौधरोपण करना।

फल–सब्जी परिरक्षण हेतु कार्य

जनवरी के महीने में गाजर, मूली, गोभी एवं शलगम से मिश्रित अचार बनायें। किन्नू से जेली एवं कैंडी तैयार करें। अमरुद से जैम एवं पापड़ बनायें। आंवला एवं गाजर से मुरब्बा एवं कैंडी बनायें। अदरक को सुखा कर रख लें। पत्ता गोभी का सॉरकराट तैयार करें। टमाटर से प्यूरी, सॉस, केचप तथा चटनी तैयार करें। फरवरी के महीने में सब्जियों को सुखा कर रख लें। आलू से चिप्स बनायें। मेथी को सुखा कर सीलबंद डिब्बों मे संग्रहित कर के रख लें। मार्च के महीने में स्ट्रॉबेरी से जैम स्क्वैश एवं पेय पदार्थ तैयार कर के रख लें। पहले से परिरक्षित फलों के गूदे से पेय एवं जैम बनायें। कचनार की चटनी बनायें। ब्रास के फूलों से चटनी तैयार करें। साथ ही साथ आगामी ग्रीष्म ऋतु के लिये इसके पेय जैसे की स्क्वैश एवं एपीटायजर बना कर रख लें। गाजर की फांकें सुखा कर रख लें या फिर उन फांकों से इंस्टेंट हल्वा मिक्स बना कर पैक करके संग्रहित करें।

बीज उत्पादन सम्बन्धित कार्य

हिमाचल प्रदेश के निचले (350–900 मीटर ऊँचाई) और मध्य पहाड़ी क्षेत्रों (900–1500 मीटर ऊँचाई) में जनवरी से मार्च सब्जियों और फूलों में बीज फसल की बुवाई और रोपण के लिए एक महत्वपूर्ण समय है ।

जनवरी

- निचले और मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में प्याज के बीज उत्पादन के लिए पौधों की रोपाई (अक्तूबर–नवंबर में बोई गई नर्सरी से) 15x10 सैं.मी. की दूरी पर करें।
- हिमाचल प्रदेश के निचले पहाड़ी क्षेत्रों में मूली और शलगम में बीज उत्पादन के लिए यूरिया उर्वरक की दूसरी खुराक खेतों में डालनी चाहिए। शलगम में 6 किलोग्राम प्रति बीघा और मूली में 8.7 किलोग्राम प्रति बीघा डालें।
- हिमाचल प्रदेश के मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में फूलगोभी में बीज उत्पादन के लिए नाइट्रोजन उर्वरक की तीसरी खुराक डालें और बोरिक एसिड 0.1 प्रतिशत (100 ग्राम/100 लीटर पानी) का छिड़काव करें। तना सड़न रोग के प्रबंधन एवं निदान के लिए डाइथेन एम–45 (250 ग्राम प्रति 100 लीटर) पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।
- हिमाचल प्रदेश में निचले और मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में कारनेशन की कटिंग लगाने के लिए जनवरी सबसे अच्छा समय है। कमर्शियल खेती के लिए मदर पौधों से लगभग 5–10 सैं.मी. (2–4 इंच) की स्वस्थ बिना फूल वाली टर्मिनल कटिंग चुनें जिसमें तीन से चार गांठें/पत्तियों के जोड़े हों। निचली पत्तियों को हटा दें और जड़ों को तेजी से उगाने के लिए कटिंग के निचले हिस्से को 500 पीपीएम एन.ए.ए. (नेफथलीन एसिटिक एसिड) रूटिंग हार्मोन के घोल में डुबोएं। कटिंग को मिट्टी से होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए उन्हें फफूंदीनाशक घोल (जैसे कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/लीटर) में डुबोएं। कटिंग को रेत या अच्छी जल निकासी वाले माध्यम में लगाएं। कटिंग को अप्रत्यक्ष धूप वाली जगह या ग्रीनहाउस में रखें और बार–बार पानी का छिड़काव करके (दिन में 4–5 बार) ज्यादा नमी (लगभग 80–90%) बनाए रखें। जड़ें उगने के लिए आदर्श तापमान लगभग 20–30°C है। जड़ें आमतौर पर 3–4 हफ्तों में निकल आती हैं। जड़ें निकलने के बाद, छोटे पौधों को दूसरी जगह लगा दें।

फरवरी

फरवरी में हिमाचल प्रदेश में मुख्य रूप से शुरुआती बसंत/गर्मी की सब्जियों की बुवाई की जाती है ।

- निचले पहाड़ी क्षेत्रों में टमाटर, शिमला मिर्च और कड़वी मिर्च की नर्सरी में बीजोपचार और मिट्टी उपचार के बाद ही नर्सरी उगानी चाहिए।
- पालक (बनर्जी जायन्ट, लौंग स्टैन्डिंग किस्मों) की बिजाई करें।

- प्याज की खड़ी फसल में नाइट्रोजन उर्वरक की दूसरी खुराक (5–6 कि.ग्रा. यूरिया प्रति बीघा) डालें।
- निचले पहाड़ी क्षेत्रों में बीज उत्पादन के लिए भिंडी (पंजाब–8 किस्म) की बुआई की दूरी पर करें।
- लौकी, करेला, खीरा, तोरी और कद्दू की बुआई करें।

मार्च

- हिमाचल प्रदेश के निचले पहाड़ी क्षेत्रों में टमाटर, शिमला मिर्च और कड़वी मिर्च के बीज उत्पादन के लिए तैयार पौध् की रोपाई खेतों में करें।
- हिमाचल प्रदेश की मध्यवर्ती पहाड़ियों में टमाटर के बीज उत्पादन के लिए अनियामित ऊँचाई वाली किस्मों को 90x30 सैं.मी. और नियमित ऊँचाई वाली किस्मों को 60x45 सैं. मी. दूरी पर रोपण करें।

फल–सब्जी फसलों के कीट प्रबन्धन सम्बन्धित कार्य

सेब में कीट प्रबंधनः सेब में लगने वाले माइट एवं सेनजोस स्केल के प्रबंधन हेतु एचएमओ 4 लीटर प्रति 200 लीटर पानी का घोल बनाकर टाईटक्लस्टर अवस्था से पहले छिड़काव करें। थ्रिप्स के प्रबंधन हेतु थायाक्लोप्रिड 100 मिलीलीटर प्रति 200 लीटर पानी के घोल का गुलाबी कली अवस्था में छिड़काव करें।

गोभी की फसल में एफिड, गोभी तितली एवं डायमंड बैक मॉथ का प्रबंधन

- सरसों को ट्रैप फसल के रूप में लगाना जिससे एफिड एवं गोभी तितली मुख्य फसल से हटकर सरसों पर आकर्षित हों।
- अजादिरैक्टिन 1500 पीपीएम का एक छिड़काव (1.5 मि.ली./लीटर)।
- अजादिरैक्टिन के छिड़काव के 7 दिन बाद क्राइसोपर्ला जैस्ट्रोवी सिलेमी की रिहाई/4 लार्वा प्रति संक्रमित पौधा ।
- पाइरिस ब्रैसिका के अंडे समूहों तथा प्रारम्भिक झुंड में रहने वाले लार्वा को यांत्रिक विधि से नष्ट करना।
- बैसिलस थुरिंजिएन्सिस के दो छिड़काव/10 मि.ली./लीटर पानी – पहला छिड़काव गोभी तितली के प्रकोप की शुरुआत पर तथा दूसरा छिड़काव 10 दिन के अंतराल पर।

आम में कीट प्रबंधन

आम में मैंगो सिल्ला के प्रबंधन हेतु गांठ वाली टहनियों को काट दें । मिलीबग के प्रबंधन हेतु तनों पर अल्काथीन का स्लिपरी बैंड लगाएं।

मौनवंशों का प्रबंधन

ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में मौन प्रबंधन हेतु बाहरी पैकिंग को फरवरी के आखिर में हटा दें। मौसम को देखकर भीतरी पैकिंग को इसके तीन सप्ताह बाद हटाएं। मध्यपर्वतीय क्षेत्रों में भीतरी पैकिंग को फरवरी के दूसरे पखवाड़े में हटाएं। निचले पर्वतीय क्षेत्रों में हल्की भीतरी पैकिंग दी गई हो तो सरसों खिलने के समय पर हटा दें। मौनवंशों की जांच और सफाई करें। मार्च के पहले पखवाड़े में 1 से 2 लीटर चीनी का घोल (चीनी और पानी का आधा–आधा भाग मिलाकर) मौनवंश में रखें। मार्च में अधिक शक्तिशाली मौनवंशों से बंद शिशु कोशिकाओं वाली कुछ फ्रेम कमजोर मौनवंशों में डाल दें। रानी

मक्खी को मार्च के बाद अंडे देने के लिए पिछले वर्ष निकाली गई चौखटें या फाउंडेशन सीट्स आधार पट्टी के सहित फ्रेम में डालें। जिन क्षेत्रों में सेब एवं गुठलीदार फलों में फूल मार्च में आ जाते हों तो 5–10 प्रतिशत फूल खिलने पर, परागण क्रिया हेतु मौनवंशों को बगीचे में स्थापित करें।

पादप रोग सम्बन्धित कार्य

- फलों जैसे सेब, नाशपाती, गुठलीदार इत्यादि की गिरी हुई पत्तियाँ इकट्ठा कर गड्ढे में डाल दें।
- प्रूनिंग के दौरान, चाकू को स्प्रिट से धोना न भूलें।
- प्रूनिंग के उपरांत कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.3%) का स्प्रे करें –बोर्डो पेंट/पेस्ट बड़े कट वाली टहनियों पर लगाएं।
- सेब की हरी कली अवस्था पर स्कैब एवं चूर्णी फफूँद से बचाव के लिए Fluxapyroxad 75g/l + Difenoconazole 50 g/l SC (60 मिलिलीटर 200 लीटर) के हिसाब से छिड़काव करें ।
- गुलाबी कली अवस्था पर Hexaconazole 4% + Zineb 68% WP का 500 ग्राम/200 लीटर के हिसाब से छिड़काव करें।
- टमाटर एवं शिमला मिर्च की नर्सरी लगाने से पूर्व मिट्टी को जाँच लें एवं फोर्मलिन से मिट्टी का उपचार करें ।
- सड़ी हुई गोबर की खाद का इस्तेमाल करें।

औषधीय व सुगंधित पौधों से सम्बन्धित कार्य

जनवरी के महीने में, नर्सरी में बिजाई किये गये औषधीय एवं सुगंधित पौधों की रबी फसलें जैसे कि बबूना, क्लेरी सेज तिलपुष्पी, चन्द्रशूर आदि पौधों के प्रत्यारोपण हेतु खेत की दो–तीन बार जुताई कर कंकड़–पत्थर खरपतवार आदि निकाल कर, उचित मात्रा में गोबर खाद डालकर तथा पानी की निकासी हेतु उचित प्रबन्ध करें तत्पश्चात पौधों का खेतों में रोपण किया जाता है। फरवरी–मार्च के महीने में कटिंग द्वारा उगाये जाने वाले सुगंधित पौधे जैसे कि रोजमेरी, सेज तथा लेवेन्डर के पौधे तैयार करने हेतु नर्सरी की क्यारियों तथा पॉलिथीन की थैलियों में बराबर मात्रा में रेत : मिट्टी : गोबर (1:1:1) का मिश्रण मिलाकर तथा स्वस्थ पौधों से कलमों को काटकर पौधे तैयार करने की प्रक्रिया शुरू की जाती है। फरवरी के अन्त तथा मार्च माह में ग्रीष्म ऋतु में उगाये जाने वाले सुगंधित पौधों जैसे कि तुलसी, अकरकरा, अश्वगंधा, भृंगराज, जगंली गेंदा, स्टीविया तथा कालमेघ आदि की नर्सरी की बिजाई हेतु नर्सरी की क्यारियाँ तैयार कर बीजों द्वारा नर्सरी में बिजाई प्रारम्भ की जाती है।

कृषिवानिकी पौधों में होने वाले कार्य

जनवरी

- पॉपलर नर्सरी का उखाड़ना, नर्सरी वाली भूमि में दूसरी जुताई व खेत तैयार करना।
- हरड़, बहेड़ा व रीठा के फल तोड़ने का कार्य करना।
- पिछले वर्ष में रोपित पौधें का कम से कम एक बार सिंचित करना। चन्दन के पौधों को हर 15 दिन के बाद (8 से 10 लीटर प्रति पौधा) पानी से सिंचित करना।
- ब्यूँस एवं पॉपलर की 2 या 3 वर्ष के पेड़ों की निचली शाखाओं को हटा लें।
- ब्यूँस एवं पॉपलर के पौधों का पौधरोपण 4X3 मीटर, 4X4 मीटर, 4X5 मीटर की दूरी पर करें।
- हरड़, बहेड़ा, आंवला दरेक के बीज नर्सरी हेतु इक्ट्ठा करें।
- पौधशाला में कलमें लगाने के लिए शहतूत,

ब्यूँस व पॉपलर की कलमें तैयार करके लगाएं।

फरवरी

- पॉपलर की नर्सरी का रोपण तथा सिंचाई।
- सीबेकथॉर्न (छरमा) की कलमें 20 से 25 सेंटीमीटर लंबी, पेंसिल की मोटाई या 1.5–2.0 सेंटीमीटर मोटाई की 3–4 आँखों वाली कलमों को मिट्टी में या पॉलिथीन बैग में मिट्टी, रेत व गोबर (1:1:1) के मिश्रण में लगाएं।

मार्च

- हरड़, बहेड़ा, आंवला, रीठा, तुनी व चन्दन के बीजों की रोपाई।
- लसूड़ा, हरड़, बहेड़ा, ढेयूं, नीम व रीठा की कलम करना।
- बरसात में रोपण करने वाले पौधे जैसे कचनार, ब्यूल, तूनी, दरेक, हरड़, बहेड़ा, आंवला, दाडू इत्यादि के बीज पॉलीथीन के लिफाफों में बोने चाहिए।

मौसम आधारित कृषि सलाह

- राज्य के किसान राज्य में लगातार अनुभव की जा रही मौसम की ऐसी अनिश्चिताओं के प्रति लचीलापन बढ़ाने के लिए बागवानी फसल आधारित कृषिवानिकी मॉडल अपना सकते हैं। ऐसे कृषिवानिकी फल आधारित फसल मॉडल जल तनाव प्रतिरोधी होने के कारण पशुधन के लिए चारे की आपूर्ति बढ़ाने में भी मदद करते हैं।
- किसानों को सूखा–सहिष्णु और देर से बोई जाने वाली गेहूँ की किस्मों जैसे एचपीडब्ल्यू–155 और एचपीडब्ल्यू–368 की खेती करनी चाहिए। जिन किसानों ने पहले ही गेहूँ की फसल बो दी है, उन्हें सलाह दी जाती है कि वे फसल की जड़ की शुरुआत के चरण में जीवन रक्षक सिंचाई करें।
- किसानों को उन सब्जियों की फसलें बोने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है जिनमें पानी की अपेक्षाकृत कम आवश्यकता होती है। कम फसल बायोमास के कारण कम वाष्पोत्सर्जन दर वाली मूली, शलजम, पालक और चुकंदर जैसी फसलों को फलों के बगीचों या कृषि वानिकी आधारित मॉडल में अंतरफसल के रूप में चुना जा सकता है।
- किसानों को जल संरक्षण और जल तनाव के प्रबंधन के लिए खेत स्तर पर फसल विविधीकरण और विविध कृषि पद्धतियों को अपनाने की सलाह दी जाती है।
- यदि साफ और शुष्क स्थिति जारी रहती है तो पाला पड़ने की बहुत अधिक संभावना होगी। फसलों पर पाले के प्रभाव को कम करने के लिए देर शाम के समय पानी की हल्की सिंचाई करें।
- फलदार पौधों के छोटे पौधों को दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व दिशा की ओर खुला रखकर बोरियों से ढककर सुरक्षित रखें।
- बागवान उचित छंटाई प्रथाओं का पालन करें और काटी गई लकड़ी को न जलाएं, इसे छोटे टुकड़ों में काटकर मल्चिंग और खाद बनाने के लिए उपयोग करें।
- किसानों को मौसम आधारित कृषि–सलाह सेवाओं के लिए मेघदूत ऐप डाउनलोड करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए।

प्रकाशक: विस्तार शिक्षा निदेशालय, डॉ. यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी-सोलन, हि. प्र.
दूरभाष: 01792-252706, 252426, ई मेल: dext@uhf.ac.in
www.yspuniversity.ac.in

सोशल मीडिया में विश्वविद्यालय को करें फोलो